शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मानसिक रूप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

मधुरिमा तिवारी
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, दी०द० उ०गो० वि०वि० गोरखपुर

डॉ० सरिता पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मानसिक रूप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

- मधुरिमा तिवारी
- डॉ० सरिता पाण्डेय

अभिरुचि का प्रयोग प्रायः ध्यान, जिज्ञासा, प्रेरणा, इच्छा, आदि जैसे शब्दों के समानान्तर किया जाता है। गैर संज्ञानात्मक पक्ष के अन्तर्गत संपूर्ण व्यक्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण विधा अभिरुचि है। किसी भी कार्य की सफलता या असफलता व्यक्ति की अभिरुचि पर ही निर्भर करता है। अतः स्पष्ट है कि बालकों की व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुये शैक्षिक परामर्श व निर्देशन प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे बालक जो मानसिक रुप से मन्दबुद्धि हैं उनकी अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुये उन्हें शैक्षिक निर्देशन प्रदान करें जिससे उनका उचित मार्गदर्शन हो सके।

विषय संकेत:- *शैक्षिक अभिरुचि, मन्दबुद्धि, शैक्षिक परामर्श, व्यक्तित्त्व*

अभिरुचि प्रेरक की वह अवस्था है जो व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। यह एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति है, जिसके फलस्वरुप विद्यार्थी परिवेश के कुछ पहलुओं के प्रति विशिष्ट अनुक्रिया प्रदर्शित करते हैं। यही कारण है कि वातावरण की भिन्न-भिन्न घटनाओं या स्थितियों में से विद्यार्थी का ध्यान उन्हीं घटनाओं की तरफ जाता है जिसमें उसकी रुचि होती है। किसी स्थिति का आकर्षण बहुत कुछ विद्यार्थी के निजी रुचियों व आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। यदि किसी विद्यार्थी की रुचि अथवा मानसिक झुकाव प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर होता है तो वह फूलों के रंग, रचना तथा सुन्दरता से प्रभावित होता है। उसके ध्यान को ये सहज ही अपने ओर आकर्षित कर लेते हैं। सम्भवतः इसी रुचि के कारण खेल को पसन्द करने वाले विद्यार्थी समाचार पत्र अथवा पत्रिका खोलते ही खेल समाचारों को प्राथमिकता से पढ़ते हैं तथा राजनीति में रुचि लेने वाले विद्यार्थी राजनैतिक घटनाओं पर पहले ध्यान दते हैं। इसी प्रकार विद्यार्थी जिनकी रुचि शिक्षा के प्रति होती है वे एक या अनेक विषयों में अभिरुचि के आधार पर ध्यान देते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अभिरुचि की परिभाषा इस प्रकार दी है-

सुपर (1949) के अनुसार ''रुचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव व्यवहार का एक पहलू है।''

गिलफोर्ड (1967) के अनुसार ''किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करने या उसमे संतुष्टि पाने की ओर ध्यान केन्द्रित करने वाली प्रवृत्ति को रुचि करते हैं।''

बिंघम (1937) के अनुसार, ''रुचि किसी अनुभव में संविलीन होने पर उससे संलग्न रहने की प्रवृत्ति है।''

स्ट्रांग (1943) ने रुचि के विषय में कहा है कि ''रुचि में हम किसी वस्तु के प्रति जागृत होते हैं, उसके प्रति प्रक्रिया करने को तैयार रहते है, उसको पसन्द करते है किन्तु जब हमारी उस व्यक्ति के प्रति रुचि नही होती तो हम उससे दूर भागते है एवं उसे पसन्द नहीं करते हैं।''

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि रुचि किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित एवं अनाकर्षित होने की जन्मजात या अर्जित प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति के व्यवहार को किसी क्रिया के प्रति आकर्षण एवं विकर्षण या पसन्द अथवा नापसन्द के रुपों से प्रकट होती है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मानसिक रूप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

मधुरिमा तिवारी
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, दी०द० उ०गो० वि०वि० गोरखपुर

डॉ० सरिता पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

समस्या –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गोरखपुर जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के इण्टरमीडिएट तथा जूनियर हाईस्कूल के आठवीं कक्षा में अध्ययनरत मानसिक रुप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन किया गया है। इसके लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन के विषय को निम्नवत रखा गया है–

''मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन।''

शोध उद्देश्य–

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के इण्टरमीडिएट तथा जूनियर हाईस्कूल के आठवीं कक्षा में अध्ययनरत मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि की जानकारी प्राप्त करना।

शोध परिकल्पना–

शहरी तथा ग्रामीण मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक होने के कारण शोधार्थी द्वारा अध्ययन में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के इण्टरमीडिएट तथा जूनियर हाईस्कूल के आठवीं कक्षा में अध्ययनरत मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

न्यादर्श–

न्यादर्श चयन प्रक्रिया में विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से तथा सम्बन्धित विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा किया गया है।

उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन के अन्तर्गत उपलब्ध विद्यार्थियों को आर0के0 टण्डन (1667) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा एवं स्वनिर्मित शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण दोनों का प्रशासन किया गया। सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा के अंकन द्वारा जिन विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि 70–90 के मध्य थी, उन्हीं की शैक्षिक अभिरुचि प्रश्नावली का मूल्यांकन किया गया और इन्हीं प्रदत्तों के आधार पर व्याख्या करके निष्कर्ष निकाला गया।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए आवश्यक प्रदत्तो का संग्रह आर0के0 टण्डन (1667) द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा तथा स्व निर्मित शैक्षिक अभिरुचि प्रश्नावली द्वारा किया गया है। स्व निर्मितशैक्षिक अभिरुचि प्रश्नावली की विश्वसनीयता एवं वैधता ज्ञात की गयी है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ –

प्रस्तुतशोध में संग्रहीत प्रदत्तों को मानकीकृत करने एवं सांख्यिकी विश्लेषण करने हेतु मध्यांक, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रतिशतांक के सूत्रों का प्रयोग किया गया है।

मानसिक रुप से मन्दबुद्धि शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि प्राप्तांकों पर आधारित मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित है–

समूह	संख्या	माध्य	प्रा0 वि0	अन्तर की त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात
शहरी विद्यार्थी	300	10.09	3.60	0.29	6.34*
ग्रामीण विद्यार्थी	300	8.25	3.62		

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मानसिक रूप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

मधुरिमा तिवारी
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, दी०द० उ०गो० वि०वि० गोरखपुर

डॉ० सरिता पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

*0.1

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मानसिक रूप से मन्दबुद्धि शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान 10.09 तथा ग्रामीण मन्दबुद्धि विद्यार्थियों का मध्यमान 8.25 है। दोनों समूहों के प्रामाणिक विचलन का मान क्रमशः 3.60 तथा 3.62 है। मध्यमान के अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि 0.29 ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात का अंकमान 6.34 है जो यह इंगित करता हैं कि मानसिक रुप से मन्दबुद्धि शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त अंकमान 2.58 से अधिक है।

निष्कर्ष-

शैक्षिक अभिरुचि को तुलना क्रान्तिक अनुपात के रुप में की गयी है, जिसमें क्रान्तिक अनुपात का मान 6.34 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के .01 स्तर पर सार्थक है। जिसमें शहरी क्षेत्र के मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थियों कीशैक्षिक अभिरुचि का मध्यमान अंक ग्रामीण क्षेत्र के मानसिक रुप से मंदबुद्धि विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के मानसिक रुप से मन्दबुद्धि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि 0.01 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

शैक्षिक महत्त्व-

शैक्षिक अभिरुचि का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी भी कार्य के प्रति अभिरुचि होने पर व्यक्ति उस कार्य को ठीक ढंग से व मन लगाकर करता है। परिणामस्वरुप कार्य सरलता एवं शीघ्रता से हो जाता है तथा उसमें सफलता भी प्राप्त होती है। यदि शिक्षक एवं अभिभावक बालक की अभिरुचि के अनुसार उसे शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन प्रदान करेगें तो बालक काशैक्षिक एवं व्यवसायिक विकास अवश्य होगा। शिक्षक, बालक कीशैक्षिक अभिरुचि के आधार पर पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक प्रक्रिया में परिवर्तन कर बालक के शैक्षिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षक, अभिरुचि के आधार पर विद्यार्थियों के समूह बनाकर अध्ययन की प्रक्रिया में परिवर्तन कर बालक का उस विषय में अधिक उपलब्धि तथा अच्छे अंक प्राप्त करने में सहायक हो सकते है साथ ही मानसिक रुप से मंदबुद्धि विद्यार्थियों हेतु शिक्षक उपर्युक्त परिवर्तन कर उनके भी शैक्षिक विकास में योगदान दे सकतें हैं।

संदर्भ :-

1- टण्डन, आर0 के0, सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा, (2/70)
2- कपिल, एच0 के0, सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2, 1975
3- गुप्ता, एस0पी0 (2001)आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4- गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अलका (2003) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. Bingham, W.V. (1937) Aptitude and Aptitude Testing, Harper and Brothers, New York.
6- Guilford, J.P. (1965) Fundamental Statistics in Psychology and Education MC. Grawhill, Bool Col, New York, Toronto, London.
7- Strong E.K. (1943) Vocational Interest of Men and Women Press, Stanford, University of California.
8- Super, (1949) Appraising Vocational Fitness, Harper, New York.